उत्तराखण्ड : 26वां राज्य स्थापना दिवस

सुलगते और उलझते सवालों के बीच

2027 के चुनाव के लिये करवट लेते नेतागण

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 23 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 9 नवम्बर 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उम्मीदों के 'पहाड़' पर सियासत का 'गैरसैंण'

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड राज्य गठन के बाद से अब तक सत्ता में रहे प्रमुख दल पर गैरसैंण के मुद्दे को सिर्फ चुनावी ढाल बनाने एवं पहाड़ की अनदेखी करने के गम्भीर आरोप लग रहे हैं। स्थानीय जनता का मानना है कि जो गैरसैंण कभी राज्य की अस्मिता और खुशहाली का प्रतीक था, वो आज केवल एक 'पिकनिक स्पॉट' और सियासी पर्यटन का जरिया बनकर रह गया है। उत्तराखण्ड राज्य का इतिहास संघर्षों और ऐतिहासिक घोषणाओं से जुड़ा है। 15 अगस्त 1996 को तत्कालीन प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा ने लाल किले की प्राचीर से उत्तरांचल राज्य के गठन की ऐतिहासिक घोषणा की थी। इसके बाद 15 अगस्त 1997 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्द्रकुमार गुजराल ने भी इसी संकल्प को दोहराया। 3 अगस्त 1998 को केन्द्र की बीजेपी नेतृत्व में बनी सरकार के मंत्रिमण्डल ने राज्य गठन को मंजूरी दी। जिसके बाद 7 दिसम्बर 1999 को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने राज्य विधेयक को अपनी हरी झण्डी दी। संसदीय इतिहास में 1 अगस्त 2000 को लोकसभा और 10 अगस्त 2000 को राज्यसभा में यह विधेयक पारित हुआ। तत्कालीन राष्ट्रपति की ओर से 28 अगस्त को अधिसूचना जारी होने के बाद आखिरकार 9 नवम्बर 2000 को देश के मानचित्र पर उत्तरांचल (अब उत्तराखण्ड) का जन्म हुआ। सुरजीत सिंह बरनाला ने राज्य के प्रथम राज्यपाल के रूप में शपथ ली और नित्यानन्द स्वामी सूबे के पहले मुख्यमंत्री बने। वहीं, दशकों पुरानी पृथक राज्य की मांग पूरी होने पर आम उत्तराखण्डी बेहद खुश था। लोगों को उम्मीद थी कि अब पहाड़ के नीति-नियन्ता अपने होंगे। भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी से मुक्ति मिलेगी। गाँव-गाँव तक खुशहाली आएगी और पलायन थमेगा लेकिन 26 साल बाद आज जनहित के मुद्दे हाशिए पर हैं। यूकेडी जैसे क्षेत्रीय दलों ने भी सत्ता में हिस्सेदारी तो पाई, लेकिन गैरसैंण को उसका हक दिलाने में वो भी नाकाम रहे। राज्य गठन के बाद प्रदेश में तेजी से शहरीकरण हुआ जिससे शहर तो विकसित होते गए परन्तु विकास की दौड़ में पहाड़ी क्षेत्र कहीं पीछे छूट गया। गैरसैंण को राजधानी बनाने के नाम पर सरकारों ने जनता के पैसों को पानी की तरह बहाया किन्तु इच्छाशक्ति की कमी के कारण सिर्फ 'आयोगों का खेल' खेला गया। जहाँ एक तरफ कौशिक समिति ने गैरसैंण को राज्य के केन्द्र में होने के कारण राजधानी के लिए सबसे उपयुक्त स्थान बताया था तो वहीं इसके ठीक विपरीत दीक्षित आयोग ने भौगोलिक और तकनीकी कारणों का हवाला देकर इसे खारिज कर दिया था। इस राजनीतिक अनिर्णय के बीच भराड़ीसैंण में बुनियादी ढांचे के नाम पर अब तक लगभग 300 करोड़ रुपै की भारी-भरकम राशि खर्च की जा चुकी है। इस निर्माण कार्य की नींव साल 2014 में तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष विधान सभा उपाध्यक्ष और पूर्व कांग्रेसी नेता सतपाल महाराज ने रखी थी.जून 2014 में करीब 30 एकड़ भूक्षेत्र में 106 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से निर्माण कार्य शुरू हुआ था। गैरसैंण के भराड़ीसैंण में स्थायी विधानसभा भवन बनने के बाद पहला सत्र सरकार में 17 नवम्बर 2016 को आहूत हुआ था। वहीं, 4 मार्च 2020 को तत्कालीन मुख्यमंत्री ने भराड़ीसैण से विधानसभा बजट सत्र के दौरान गैरसैंण को सूबे की ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किया था। इसके बाद 8 जून 2020 को राज्यपाल की मंजूरी के बाद नोटिफिकेशन जारी किया गया था। दूसरी ओर 4 मार्च 2021 को विधानसभा बजट सत्र के दौरान मुख्यमंत्रीने गैरसैंण को उत्तराखण्ड की तीसरी कमिश्नरी बनाए जाने की घोषणा की, लेकिन नेतृत्व परिवर्तन के बाद 9 अप्रैल 2021 को तत्कालीन मुख्यमंत्री कैबिनेट ने कमिश्नरी के इस निर्णय को स्थगित कर दिया।

विस की बैठक अवधि घटकर 45 दिन रह गई

नौ नवम्बर, 2000 को उत्तराखण्ड देश के मानचित्र पर 27वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। 13 जिलों के छोटे से उत्तराखण्ड में 71 प्रतिशत से अधिक

शेष पृष्ठ 5 पर

वर्तमान में भराड़ीसैंण विधानसभा परिसर 130 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। इसमें से 8 एकड़ में मुख्य भव्य विधानसभा भवन निर्मित है। इसके अलावा परिसर में शानदार विधायक आवास, मुख्यमंत्री निवास, मंत्रियों के बंगले, आफिसर हॉस्टल और कर्मचारी आवास बनकर तैयार हो चुके हैं। इसी परिसर में 65 एकड़ भूमि सचिवालय निर्माण के लिए भी प्रस्तावित की गई है, लेकिन विडम्बना देखिए कि मिनी सचिवालय के लिए शुरुआती काम के लिए साल 2015 में ही 3 करोड़ रुपए की पहली किस्त भी जारी कर दी गई थी लेकिन निर्माण कार्य आज तक शुरू ही नहीं हो सका है। उत्तराखण्ड विधानसभा चुनाव 2027 की आहट के साथ ही पहाड़ के मुद्दे एक बार फिर राजनीतिक बहस के केन्द्र में आने लगे हैं। राज्य गठन के 26 वर्ष बाद भी गैरसैंण को स्थाई राजधानी बनाने की मांग, पलायन, बेरोजगारी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, सड़क सम्पर्क, भू-कानून और मूल निवास, महिला सुरक्षा जैसे मुद्दे पर्वतीय क्षेत्रों में लोगों की प्रमुख चिन्ताएं बने हुए हैं। माना जा रहा है कि आगामी चुनाव में इन्हीं मुद्दों पर राजनीतिक दलों की परीक्षा होगी।

पर्वतीय क्षेत्रों में लम्बे समय से गैरसैंण को स्थाई राजधानी बनाने की मांग उठती रही है। राज्य आन्दोलनकारियों और विभिन्न सामाजिक संगठनों का मानना है कि पर्वतीय राज्य की राजधानी पहाड़ में होने से विकास का सन्तुलन बनेगा और पहाड़ी क्षेत्रों की समस्याओं को प्राथमिकता मिलेगी। हालांकि गैरसैंण को ग्रीष्मकालीन राजधानी का दर्जा मिल चुका है किन्तु स्थाई राजधानी का मुद्दा मौजूदा दौर में भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। इसके साथ ही पलायन पहाड़ का सबसे बड़ा संकट बना हुआ है। रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में हजारों युवा गाँव छोड़कर शहरों की ओर जा रहे हैं। कई गाँवों में आबादी लगातार घट रही है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचा प्रभावित हो रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं की

शेष पृष्ठ 5 पर

अगली सरकार बनाने के दावे के साथ दवा करने में कोई पीछे नहीं है

कार्यालय प्रतिनिधि

विधानसभा चुनाव 2027 से पहले राज्य स्थापना दिवस का यह अवसर सुलगते और उलझते सवालों के बीच है। उत्तराखण्ड में जिस प्रकार से आन्दोलनों की बाढ़ आ चुकी है और बेशर्म छुटभैये अपनी हरकतों से शर्मनाक घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं, वह प्रदेश को खतरनाक मोड़ पर ला चुका है।

उत्तराखण्ड में पार्टियां और नेता अगली सरकार बनाने के दावे के साथ-साथ दूसरे की दवा करते दिखाई दे रहे हैं। पुराने किस्से-कहानियों के साथ किसको किस मोड़ पर पटकना है और किस जगह लाकर छोड़ना है, इसी पर पूरी राजनीति दिखाई दे रही है। अपनों और अपनों से बाहर उलझे नेताओं को देख आम जनता अपने को ठगा महसूस कर रही है। इस पर्वतीय प्रदेश में जिस प्रकार के घपले-घोटालों की आग बन हुई है, वह राज्य अवधारणा को कुचल चुकी है। यह तय करना कठिन है कि कौन ईमानदार है क्योंकि अपने स्वार्थ के लिये एक-दूसरे को पटकते नेताओं का ईमान डोल चुका है। साथ ही चाटुकारिता पर उतर चुके अभिनेता 'गलन' वाली स्थिति में दिखाई दे रहे हैं। लगे हाथ अपना काम निकालने वाले अधिकारी भी बेहद चर्चाओं में बने हैं।

प्रदेश में सबसे ज्यादा सुलगता सवाल अंकिता भण्डारी हत्याकाण्ड बना हुआ है। इसको लेकर सरकार साफ कर चुकी है कि वह गलत करने वालों का सजा दे चुकी है जबकि बार-बार उठ रहे सवाल की मामले में वीआईपी का नाम उजागर हो और उसे सजा मिले, सब अचम्भित से हैं। सड़क से लेकर सदन तक हल्ला प्रदर्शन हो चुका है। खेल मंत्री रेखा आर्य और बरेली के गिरधारी की जोड़ी की चर्चा इस पर्वत प्रदेश के अलावा चारों ओर है। तरह-तरह के आरोपों के बीच मंत्री रेखा जिस प्रकार से अब अपनी बात करती दिख रही हैं, वह कोई आश्चर्य की बात नहीं लग रहा है क्योंकि आम जनता मान चुकी है कि राजनीति में नेता बनने के लिये 'पच-अपच' सब अर्पित हो जाता है। वह अपने पति गिरधारी पर बड़े आरोप लगा चुकी हैं और साहू उर्फ पप्पू मंत्री रेखा पर 210 करोड़ के घपले का खुलेआम आरोप लगा चुके हैं।

विधायक उमेश कुमार अपने तौर-तरीकों से, पूर्व विधायक प्रणव चैम्पियन अपने तेवरों से, पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल अपने अकड़ से, विधायक अरविन्द पाण्डे अपनी दबंगता से बार-बार इस प्रदेश के माथे पर चमकने की नाकाम कोशिश करते रहे हैं। हरक सिंह रावत की गर्जना सवाल कर रही है। हरक सिंह हर बड़े नेता का नाम लेकर जिस प्रकार खुल्लम-खुल्ला बोलते हैं वह राजनीति और इस प्रदेश के हालातों को धुनने जैसा है। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत अपने बयानों से सबको उलझाकर रास्ता ढूंढते दिखाई दे रहे हैं। उत्तराखण्ड के असल मुद्दों को लेकर लड़ने वालों के बीच बिचौलियों ने भी सेंध लगा ली है। इस प्रकार हर कोई अपनी जय-जय के अलावा अपने दर्द का इलाज ढूंढ रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

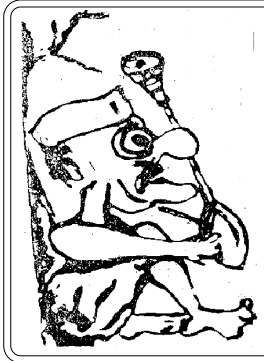
पिघलता हिमालय

उत्सव-त्यौहार केवल प्रदर्शन नहीं हैं

दीपों का त्यौहार चहुं ओर खुशियां भर दे। सुख-समृद्धि की कामना करते हुए दीपावली का त्यौहार सबको उमंगित करने वाला हो। इसके अलावा भी त्यौहारों के पीछे मूल भाव अपने समाज को जोड़ने, एक-दूसरे का सहयोगी बनने, अपनी परम्पराओं को संजोए रखना ही है। हमारे उत्सव-त्यौहार को इसी कारण धार्मिक आस्था से भी जोड़कर रखा गया है ताकि किसी प्रकार की मनमानी न हो परन्तु अति हायतौबा के इस दौर में उत्सव-त्यौहार को प्रदर्शन सा मान लेने वालों ने इसके मूल को भुला दिया है। इन उत्सवों का उत्साह तब दुगुना होता है जब हम किसी कमजोर की सहायता करते हैं और उन्हें आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

चल रहे दौर में उत्सव-त्यौहार के अलावा गढ़ दिये गये आयोजनों की भरमार है और इन सबके पीछे मुंहसुख और प्रदर्शन/दिखावा है। यह भी मान लिया गया है कि इस प्रकार के प्रदर्शन से युवा अपनी जड़ों से जुड़ जाएंगे और संस्कृति भी बनी रहेगी। जबकि सच्चाई यह है कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिये समय की रफ्तार के अलावा अपने बुजुर्गों द्वारा सींचे गये लोक संस्कार को नियमित गुनते-बुनते रहना पड़ता है। यह सब किसी त्यौहार के दिन प्रदर्शन या किसी आयोजन को करते हुए दिखाने भर से नहीं हो सकता।

उत्सव-त्यौहार के प्रदर्शन में नेता-अभिनेता सब इसलिये कूद मारना चाहते हैं ताकि उनको एकजुट भीड़ मिल जाए, उनके लिये यह सब मजमा भर होता है। साथ ही वर्तमान में आयोजनों का मैनेजमेंट करने वाले उद्योग भी चतुराई से इसका फायदा ले रहे हैं। इस पूरे खेल में बाजार हमारी संस्कृति पर हाबी होता जा रहा है। हमारे उत्सव-त्यौहार बाजार में रेंगने भर को हो चुके हैं और दूर दराज से सुने-सुनाए या फिल्म आदि से प्रचार पा चुके उत्सव की नकल हमारे गांव-घरों तक प्रवेश कर रहे हैं। इन हालातों में कैसे मान लें कि हम अपनी संस्कृति को संरक्षित कर रहे हैं। उत्सव-त्यौहार केवल प्रदर्शन की चीज नहीं हैं। इसके मूल को समझना और उससे जुड़ना जरूरी है।



फसक

दाज्यू, कौतिक अब कहाँ रहे? घमाघम हो रही ठैरी

फनफनाट-झमझमाट का जोर चल रहा है बल

दाज्यू, प्रदेश में महोत्सवों की जगमग से रौग्गी ब्लॉगर पगला गया है। कह रहा था- 'भूकम्प जैसा महसूस होने लगा है। जिधर देखो, चौड़। मसाण पूजने लेकर देवता औतरने तक सबकुछ मंच सजाकर भूंभाट हो रहा है। खूब मजा है जिसमें बच्चे-बूढ़े अब हौय-हौय करने लगे हैं।' दाज्यू, कौतिक अब कहाँ रहे? घमाघम हो रही ठैरी। खूब बमक लेने दो। यह सब देखने का भी खूब मजा है। मृत्युलोक में आकर हर किसी की अपनी हसरत हुई।

फनफनाट-झमझमाट का जोर चल रहा है बल। हल्द्वानी में हुए एक आयोजन में ब्लॉगर सौरभ के मंच में जूते पहन कर आने पर सोशल मीडिया में बहस छिड़ गई। क्याप्प बात। इसमें भी बहस जो क्या करनी ठैरी। सबको पता है मोबाइल में हाथ फेरते रहने और थुग्गा-फतीजी करने से जगमग बनी रहती है। बांकी तो घुप्प अन्धेरा ही ठैरा। सब मनमाफिक चल रहा है। मोहल्ले की हर गली में कीर्तन हो रहे हैं। अल्ट्रा मैराथन का जलवा भी देखने को मिला लेकिन विधायक हरीश धामी ज्यू बहुत नाराज हैं। उनको न्यौता ही नहीं दिया गया बल। उनका कहना है- 'मेरे विधानसभा क्षेत्र में आयोजित सरकारी कार्यक्रम में मुझे ही न बुलाना लोक परम्पराओं का अपमान है।'

दाज्यू, बागेश्वर की शिक्षिका की यूटीईटी की अंकतालिका फर्जी निकली बल। शिक्षा विभाग सख्ती में है। इससे पहले सत्यापन प्रक्रिया के दौरान दस शिक्षकों के दस्तावेज फर्जी और कूटचरित पाए गए गए थे, जिनकी सेवाएं समाप्त कर दी गई हैं। दाज्यू, दिल्ली की एक कम्पनी की ओर से आउटिंग पर रामनगर रिजॉर्ट में आए ग्रुप में शामिल युवती से दुष्कर्म किया बल। रात को शराबबाजी की बात भी कह रहे हैं।

दाज्यू, हरक दा की डड़ाडाड़ मची है। वह कह रहे हैं- 'जैनी प्रकरण पर उनका नाम जोड़ने वाले अपना इतिहास देख लें।' विधायक प्रीतम सिंह के भाई चमन सिंह और पूर्व ब्लाक प्रमुख राजपाल सिंह के खिलाफ त्यूणी में मुकदमा दर्ज हो गया। दीक्षा और साक्षी ने गैरसैंण आकर बताया- 'गाली गलौज करते हुए उन्हें कांग्रेस में शामिल करने के लिये दबाव बनाया गया।'

चलो, गैरसैंण विधानसभा का कौतिक भी निपट गया। सीएम धामी ज्यू ने 7844.18 करोड़ का अनुपूरक बजट प्रस्तुत किया। लाग-लपेट तो लगी ही ठैरी। -तुम्हारा भुली झकरुवा

उर्मिला सनावर की कहानी के साथ खिंचता रहा है अंकिता प्रकरण

- **आरती** गौड़ की कहानी भी कम मरोड़ वाली नहीं है। सियासी घमासान
- **अभिनेत्री** उर्मिला अपने निजी मामलों में गिरफ्तार लेकिन आंच लपटें चारों ओर है
- **दुष्यन्त** गौतम को राज्यपाल पद से हटाने की मांग को लेकर प्रदेशभर में प्रदर्शन हुए हैं
- **कांग्रेस** इस्तेमाल कर रही, हमारी सरकार ने शुरू से पीड़ित के साथ : पुष्कर धामी
- **कोर्ट** नहीं पहुंचे सुरेश राठौर और उर्मिला, पेंच फंसा हुआ है अभी



अंकिता भण्डारी हत्याकाण्ड को लेकर एक ओर सरकार पीड़ित परिवार के साथ होने की बात कर रही है, दूसरी ओर लगातार प्रदर्शनों का दौर चल रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा है कि अंकिता के नाम को लेकर कांग्रेस उसका इस्तेमाल कर रही है। न्याय यात्रा करने से पहले कांग्रेस को अपने दामन में झांकना चाहिये। जबकि हमारी सरकार शुरू से ही पीड़ित परिवार के साथ है और तीन आरोपी जेल में हैं। सीबीआई जाँच के लिये भी सिफारिश की है।

जब अंकिता मामले में उर्मिला नामक महिला के मैदान में उतरने से पूरा प्रदेश हिला हुआ है, ऐसे में कोई न कोई बात हो अवश्य होगी ही। उर्मिला सनावर की कहानी के साथ अंकिता प्रकरण भी खिंचता रहा है। उर्मिला ने जैसे ही अपने नार्को टेस्ट के लिये सीबीआई से कहा उसके बाद अगले दिन उनकी गिरफ्तारी हो गई। पुलिस ने यह गिरफ्तारी उनके अपने निजी मामलों को लेकर की है लेकिन इसकी लपटें भी चारों होनी ही थी क्योंकि अंकिता प्रकरण में वह जिस प्रकार खुलकर लगातार बयान दे रही है और साक्ष्य होने के दावे करती रही है, उसने दिग्गजों की नींद हराम कर रखी है। उनकी गिरफ्तारी के बाद और भी बयानबाजी तेज हुई हैं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने कहा कि सच्चाई छिपाने की साजिश चल रही है।

बताया जा रहा है कि सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक और मानहानिकारक टिप्पणी करने, 5 करोड़ रुपये मांगने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप में रानीपुर पुलिस ने अभिनेत्री उर्मिला सनावर को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार भाजपा के पूर्व विधायक सुरेश राठौर की पुत्री दीपिका की शिकायत पर 24 अक्टूबर की रात मुकदमा दर्ज किया गया था। आरोप है उर्मिला ने व्हाट्सएप कॉल कर रविदास धाम की सम्पत्ति अपने नाम करने और 5 करोड़ देने की मांग की। कोर्ट में पेश करने के बाद उर्मिला को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। इसके बाद तत्काल एक और मुकदमा उर्मिला के खिलाफ हुआ। देहरादून मोती बाजार निवासी सागर ने आरोप लगाया कि उर्मिल ने अदालत परिसर में पेशी के दौरान सिक्किम के राज्यपाल दुष्यन्त गौतम, भाजपा नेता बीएल सन्तोष और आरती गौड़ के खिलाफ आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जाँच शुरू की है। हालांकि आरोपों की पुष्टि जाँच और न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही होगी।

हत्याकाण्ड में कथित वीआईपी से जुड़े दावों के दावों की जाँच के लिए नार्को टेस्ट कराने के लिये पूर्व विधायक सुरेश राठौर और उर्मिल सनावर को सीबीआई कोर्ट में 26 अक्टूबर को पेश होना था, लेकिन दोनों ही नहीं पहुँचे, जिससे यह पेंच भी फंसा हुआ है। नार्को टेस्ट कराने के लिये सहमति देने के बाद राठौर कोर्ट में नहीं आए और उन्होंने पत्र भेजकर अपने स्वास्थ्य खराब होने की बात कही। जबकि उर्मिला पुलिस की गिरफ्त में है। इस प्रकार तारीख पर तारीख.....।

इधर अंकिता भण्डारी हत्याकाण्ड को न्याय की मांग उठाते हुए प्रदेश की ग्रीष्म कालीन राजधानी गैरसैंण में सदन के दौरान जबर्दस्त आन्दोलन हुआ। यूकेडी और कांग्रेस सहित तमाम संगठनों क लोगों की पुलिस से झड़प हुई। मामले में में कथित वीआईपी की भूमिका की जांच की और सिक्किम के राज्यपाल दुष्यन्त गौतम को पद से हटाने की मांग को लेकर प्रदेश भर में विभिन्न जन संगठनों का प्रदर्शन जारी है। कांग्रेस, यूकेडी के बैनर तले बड़े प्रदर्शन देखने को मिले हैं। हल्द्वानी में प्रदर्शनकारियों ने सिटी मजिस्ट्रेट के माध्यम से राष्ट्रपति को चार सूत्रीय ज्ञापन भेजकर मामले की निपष्पक्ष जांच की मांग उठाई। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि अंकिता हत्याकाण्ड में कथित वीआईपी की भूमिका से जुड़े सवालों का अब तक सन्तोषजनक जवाब नहीं मिला है। भाकपा माले के नैनीताल जिला सचिव डॉ. कैलाश पाण्डे ने कहा कि मामले में निष्पक्ष जांच होनी चाहिये। उन्होंने आरोप लगाया कि सीबीआई जाँच के बावजूद कथित वीआईपी की भूमिका से जुड़े सवालों की पर्याप्त पड़ताल नहीं हुई है। रामनगर में महिला मंच के द्वारा आयोजित प्रदर्शन में विभिन्न संगठनों ने अंकिता हत्याकाण्ड के कथित वीआईपी कहे जा रहे भाजपा से जुड़े नाम को बर्खास्तगी की मांग की। कौशल्या चन्याल के संचालन में आयोजित सभा में वक्ताओं ने कहा कि आरोपियों को सजा देने के दौरान कोर्ट ने कथित स्पेशल सर्विस को जिस्मफरोशी व वीवीआईपी को योन पिपासु बताया था। उर्मिला सनावर नामक महिला की ऑडियो बातचीज में बहुत राज हैं। वक्ताओं ने मुख्य अभियुक्त पुल्किल आर्य के मोबाइल फोन का डाटा रिकवन कर उसकी कॉल डिटेल के आधार पर मामले की जांच की मांग की। इस मौके पर संयुक्त संघर्ष समिमि के ललित उप्रेती, समाजवादी लोक मंच के गिरीश चन्द्र आर्य, प्रगतिशील महिला एकता मंच की तुलसी छिमवाल, बीडी नैनवाल, गोविन्द सिंह अधिकारी, महेश पंचोली, उपपा के प्रभात ध्यानी, रेखा कड़ाकोटी, आदि थे।

उर्मिला सनावर की लम्बी कहानी में आरती गौड़ की कहानी भी कम मरोड़ वाली नहीं है। इस महिला ने जिस प्रकार से सोशल मीडिया पर अपनी बात रखने के अलावा बयानबाजी की है उससे सियासी घमासान की आग भड़कती जा रही है। इतना तो तय है कि आगामी विधानसभा चुनाव में अंकिता हत्याकाण्ड मुख्य रूप से बना रहेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उमंग

दीपावली हमारी सांस्कृतिक विरासत

रतन सिंह किरमोलिया

त्योहार उत्सव आदि जहाँ हमारे राष्ट्रीय लोक जीवन की आस्था आकांक्षा उत्साह एवं उमंगों के प्रतीक होते हैं, वहीं ये हमारे राष्ट्रीय लोक जीवन में संस्कृति और सभ्यता के दिग्दर्शन भी कराते हैं। इन्हें बार बार मनाए जाने का उद्देश्य है आशावान लोक जीवन में आस्था विश्वास एवं संकल्पों का सुदृढ़ीकरण। ये परम्पराएं हमारी सांस्कृतिक विरासत भी मानी जाती हैं। इन्हें अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इनका हर्षोल्लास के साथ नियमित मनाया जाना जरूरी है।

दीपावली पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कई पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथा प्रसंग मिलते हैं। इसका प्राचीनतम स्वरूप आर्यों से जोड़ा जाता है। जब वे घुमक्कड़ जीवन छोड़कर नदियों के किनारे बसे तो उन्होंने खेती करना प्रारम्भ किया। पहले पहल खेती से उत्पन्न नए अन्न को देखकर हर्षित होना स्वाभाविक है। अपनी खेती से उत्पन्न अन्न को सर्व प्रथम उन्होंने अपने इष्टदेवता को चढ़ाया तब स्वयं ग्रहण किया। सम्भवतया धान के च्यूड़े चढ़ाने की परम्परा का श्रीगणेश वहीं से हुआ।

बाद के युग में इस पर्व को कयेक कथाओं से से जोड़ कर देखा जाता है। एक कथानुसार कहा जाता है दैत्यों के राजा बलि ने अपने प्रताप से देवताओं को पराजित कर बन्दी बना लिया। लक्ष्मी भी उनके साथ थी। तब देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने वामन का रूप धारण कर बलि का सारा राज्य दान में मांग लिया। तब देवता और लक्ष्मी बन्दी जीवन से मुक्त हुए। बाद में बलि ने अपना राज्य वापस मांगा तो वामन ने वर दिया कि जिन तीन दिनों में तुम्हारा राज्य नापा था। उन तीनों दिन जो दीपदान करेगा, लक्ष्मी उसके घर में निवास करेगी। यह भी माना जाता है कि राजा बलि प्रतिबर्ष दीपावली के दिन पाताललोक से धरती पर आकर मानव समाज की इस पूजा को ग्रहण करता है।

लक्ष्मी पूजन की एक अन्य कथा भी है। जो समुक्त मंथन से जुड़ी हुई है। कहते हैं एक बार ऋषि दुर्वासा ने राजा इन्द्र को माला भेंट की। परन्तु लक्ष्मी के मद में चूर राजा ने माला का तिरस्कार कर दिया। तो ऋषि दुर्वासा ने कुपित होकर इन्द्र को श्राप दे दिया कि जा तीनों लोकों में लक्ष्मी का नाश हो जाएगा। वैसा ही हुआ और लक्ष्मी विलुप्त हो गई। बाद में समुद्र मन्थन में चौदह रत्नों के साथ लक्ष्मी का कार्तिकी अमावस्या के दिन पुनर्जन्म हुआ। इसी खुशी में कार्तिक मास की अमावस्या को लक्ष्मी की पूजा की परम्परा प्रारम्भ हुई।जो अनवरत रूप से आज तक चली आ रही है।

लक्ष्मी पूजा का एक प्रसंग दुर्गा सप्तशती के अनुसार महालक्ष्मी कालिका का ही एक कृपा रूप माना जाता है। महालक्ष्मी महाकाली और महासरस्वती क्रमशः अर्थबल शरीरबल और बुद्धि बल के प्रतीक माने गए हैं। कालिका पुराण में शक्ति पूजा की भी एक महत्वपूर्ण कथा है। उससे भी इस आलोक पर्व को जोड़ कर देखा जाता है।

समुद्र मन्थन में धन्वंतरि भी निकले। कहा जाता है उनका उदय इसी त्रयोदशी को हुआ था। इसे धनतेरस के रूप में मनाया जाता है। चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है। क्यों कि इसी दिन नरकासुर राक्षस का बध किया गया था। इसे छोटी दिवाली के रूप में मनाया जाता है। एक पौराणिक कथानुसार भैयादूज के दिन यमराज अपनी बहन यमुना से मिलने और भोजन करने उसके घर जाते हैं।

उत्तर भारत में दिवाली को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम से जोड़ कर देखा जाता है। मान्यता है कि रावण का बध कर लंका विजय के बाद जब श्री राम अयोध्या लौटते हैं। श्रीराम की विजय की खुशी में दिए जलाने की शुरुआत हुई। इसने एक परम्परा का रूप ले लिया। जो आज तक अनवरत चलती आ रही है परन्तु इतिहासकार इसे सही नहीं ठहराते। बाल्मीकि रामायण भी इस बात की पुष्टि करती है। बाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्री राम ने चैत्र मास की अमावस्या को रावण का बध किया और लंका पर विजय प्राप्त की। लंका विजय के बाद श्री राम वैशाख मास में अयोध्या लौटे थे। भगवान राम में आस्था के कारण इसने परम्परा का रूप ले लिया। लोक परम्परा में इसे इसी दीपावली से जोड़ दिया गया है।

दीपावली के इस प्रकाशोत्सव पर आज भी घरों में सफ़ सफाई लिपाई पुताई रंग-रोगन किया जाता है। घर की देहरी सीढ़ियों ओखलियों और देव मन्दिरों की लाल मिटी या गेरू से लिपाई की जाती है। चावल को भिगोया जाता है। उसे पीस कर गाढ़ा घोल तैयार किया जाता है। स्थानीय लोक भाषा में इसे 'बिस्वार' कहा जाता है। इस बिस्वार के घोल से घर द्वार देहरी सीढ़ियों ओखलियों और देवमन्दिरों में 'ऐपण' निकाल कर सजावटी लिखाई करके सजाया जाता है। फूलों की मालाएं बनाकर घर द्वार मन्दिर सजाए जाते हैं। आजकल तो तरह-तरह की बिजली मालाओं से सजाया जाता है। सजावट के किस्म किस्म के कृत्रिम संसाधन अपनाए जाने लगे हैं। छोटी दीपावली और अमावस्या के लक्ष्मी पूजन के दिन तेल या घी के दिए जलाए जाते हैं। अमावस्या की रात महालक्ष्मी पूजन किया जाता है। इसमें लोक का उत्साह एवं हर्षोल्लास देखते ही बनता है।

दीपावली का यह लोकोत्सव धनतेरस से प्रारंभ हो जाता है। दूसरे दिन महालक्ष्मी पूजन और अगले दिन गोवर्धन पूजा का जाता है। उन्हें पिठ्या तिलक लगाकर उनके गले में फूल-मालाएं पहनाई जाती हैं। उसके बाद बिस्वार में हाथ डुबोकर हथेली और अंगुलियों की छाप उनके सिर पर एवं बदन पर लगाई जाती हैं। स्थानीय बोली में इसे 'हत्याई' लगाना कहा जाता है। इसके बाद सभी पशुओं को कई तरह के अनाजों से तैयार आटे की लोइयां बनाकर खिलाई जाती हैं। इस तरह गोवर्धन पूजा की परम्परा सम्पन्न होती है। आज भी यह परम्परा मौजूद है। यह हत्याई घरों में बच्चों और बड़ों को भी लगाए जाने की परम्परा है।

अगले दिन पुनः पशुओं को और घर में बच्चों को बिस्वार में सेर या गिलास डुबोकर उनके सिर और पीठ में ठप्पे लगाए जाते हैं। इसे 'माणा' लगाना कहा जाता है। यहाँ यह ध्यान योग्य बात है कि गर्भवती बहुओं और पशुओं को माणा के स्थान पर हत्याई ही लगाने की परम्परा है। हत्याई और माणा घरों में मौजूद बक्सों और अनाज रखने के भकारों के ऊपर भी लगाए जाते हैं एवं उनके ऊपर दीपक जलाए जाते हैं। यह समृद्धि और धन-धान्य के द्योतक माने जाते हैं।

भैया दूज के दिन सुबह भिगोए धानों को भूनकर च्यूड़े तैयार किए जाते हैं। इन च्यूड़ों को कुल पुरोहित द्वारा अभिमंत्रित किया जाता है। तत्पश्चात ही इन्हें परिवार के लोग अपने और बच्चों के सिरों में रखते हैं और देव मन्दिरों में चढ़ाया जाता है। यहाँ यह भी परम्परा है। परिवार के जो लोग देश प्रदेश में रहते हैं। लिफाफों में उन्हें भी च्यूड़े भेजे जाते हैं। इस दिन भाई बहन भी एक दूजे के सिर पर च्यूड़े रखते हैं। बड़े आशीर्वाद देते हैं और छोटे आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। इस तरह भैयादूज का पर्व अत्यधिक हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

घर गाँवों में दीपावली पर्व को दीपोत्सव के साथ ही इसे अज्ञान रूपी अन्धकार से ज्ञान रूपी आलोक पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। दीपावली को दिवाली, च्यूड़ी त्यार, बग्वाली, मात हत्याई त्यार आदि लोक नामों से भी जाना पहचाना जाता है। दिवाली में ताश एवं जुवा खेलने की भी परम्परा रही है। यह दीगर बात है कि आज अब धीरे-धीरे इन परम्पराओं में परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। बड़े बड़े बम पटाखों की दिखावट बढ़ रही है। इनसे वातावरण में प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इससे बचने की जरूरत है।

ज्योतिष की बातें 306

12 नवम्बर 2026 को मंगल मित्रराशि सिंह में प्रवेश करेगा। इस समय मंगल बली रहेगा। मंगल मुख्य रूप से स्वास्थ्य, धैर्य, परिश्रम, साहस, नेतृत्व क्षमता, युद्ध एवं खेलकूद, शत्रु पर विजय, भूमि-भवन-वाहन का लाभ, मशीनरी, इंजीनियरिंग आदि का कारक होता है। मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका के अनुसार मंगल त्रिषडाय अर्थात् तीसरे, छठवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है तथा कर्क व सिंह राशियों के लिए योगकारक भी होता है। अतः अगले 118 दिन मंगल अपने कारक विषयों में मिथुन, मीन, तुला, सिंह व कर्क राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। इन 4 महीने की अवधि में मंगल की अन्य ग्रहों से युति व दृष्टि के फलस्वरूप मंगल के शुभाशुभ फलों में न्यूनाधिक परिवर्तन भी होगा।

14 नवम्बर 2026 को अभी तक वक्री चल रहा शुक्र कन्या राशि में मार्गी हो जाएगा अतः अब शुक्र से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल स्वाभाविक रूप से प्राप्त होंगे।

गोवर्धन पूजा- कार्तिक शुक्लपक्ष प्रतिपदा उदय व्यापिनी त्रिमुहूर्ता तिथि में गोवर्धन पूजा की जाती है अतः मंगलवार 10 नवम्बर 2026 को गोवर्धन पूजा अर्थात् अन्नकूट महोत्सव मनाया जाएगा।

भैयादूज- कार्तिक शुक्लपक्ष द्वितीया अपराह्न व्यापिनी तिथि तदनुसार बुधवार 11 नवम्बर 2026 को यमद्वितीया अर्थात भैयादूज का पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

उत्तराखण्ड सहित पांचों चुनावी राज्यों से हटाए जाएं गृह जिले व एक जिले में तीन वर्ष से जमे अधिकारी

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं पंजाब सहित 5 राज्यों में 2027 की शुरुआत में होनेवाले विधानसभा चुनाव को देखते हुए चुनाव आयोग ने चुनाव कार्य से जुड़े ऐसे सभी अधिकारियों के तबादले के निर्देश दिए हैं, जो गृह जिले में पदस्थ हैं या फिर एक ही जिले में पिछले चार वर्षों में तीन वर्ष पदस्थ रहे हैं। उत्तराखण्ड, पंजाब, गोवा और मणिपुर में इस पिछली अवधि की गणना 31 मार्च 2027 से होगी, जबकि उत्तर प्रदेश में 31 मई 2027 से इसकी गणना करने के निर्देश हैं। आयोग ने पाँचों चुनावी राज्यों के मुख्य सचिवों व पुलिस महानिदेशकों को 30 नवम्बर तक इसकी अमल रिपोर्ट भी प्रस्तुत करने के निर्देश दिये हैं। इसमें चुनाव प्रक्रिया से जुड़े ऐसे अधिकारियों व कर्मचारियों को भी हटाने के निर्देश दिए हैं, जो पिछले विधानसभा चुनाव या उपचुनाव के दौरान उसी जिले में या फिर निर्वाचन क्षेत्र में पदस्थ थे।

ऐतिहासिक बौराणी कौतिक

गंगोलीहाट। क्षेत्र का ऐतिहासिक बौराणी कौतिक इस बार भी पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। उल्लेखनीय है कि जुए के खेल के लिये बिख्यात रहे बौराण क्षेत्र की संस्कृति का बहुत बड़ा हिस्सा अब बदल चुका है लेकिन क्षेत्र की एकता आज भी यादगार है। समय के साथ देखा देखी इस कौतिक को महोत्सव नाम दे दिया गया है और मंच पर नाच-गाने होने लगे हैं लेकिन इसकी मुख्य आकर्षण मशाल जलाकर होने वाला जुलूस है। घरेलू कुटीर उद्योग प्रदर्शन भी होता है।

सोमेश्वर महोत्सव में भी थिरके

द्वाराहाट/सोमेश्वर। पहाड़ी स्वैग सांस्कृतिक मंच द्वारा सोमेश्वर महोत्सव का तीन दिवसीय आयोजन किया गया लेकिन खेल मंत्री रेखा आर्य प्रकरण के बाद इस बाद इस बार के आयोजन में उत्साह नहीं दिखाई दिया। भीड़ कम होने के बावजूद आमंत्रित कलाकार मंच पर थिरके। सोमेश्वर में चल रही नेताओं की रैली-प्रदर्शन के कारण ज्यादा लोग इधर-उधर थे। फिलहाल महोत्सवों की बाढ़ में यह आयोजन भी निपट गया।

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav,
Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

खूना बोरा में तीन दिनी पूर्णागिरी महोत्सव

लोहाघाट। खूनाबोरा गाँव में तीन दिवसीय माँ पूर्णागिरी महोत्सव का आयोजन किया गया। मानेसर धाम के समीप भव्य पूर्णागिरी मन्दिर का जन सहयोग से निर्माण किया गया है, जहाँ यह आयोजन किया गया। इस दौरान प्रवासियों के आगमन से इलाके में खूब रौनक रही।

अ. मेडिकल कालेज निर्माण तेजी के निर्देश

अल्मोड़ा। राजकीय मेडिकल कॉलेज में स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिये शासन स्तर पर तेजी के निर्देश मिले हैं। प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा निदेशक डॉ.आशुतोष सयाना ने कालेज का औचक निरीक्षण करते हुए कहा कि फैकल्टी की कमी को जल्द ही दूर किया जायेगा। निरीक्षण के दौरान प्राचार्य डॉ. जीएस तितियाल, प्रशासनिक नोडल अधिकारी डॉ.अनिल पाण्डे मौजूद थे।

काशीपुर में अवैध कॉल सेंटर पकड़ा

काशीपुर। एसटीएफ और साइबर क्राइम कुमाऊँ यूनिट ने दूरसंचार विभाग (डॉट) के साथ्झ मिलकर काशीपुर क्षेत्र में चल रहे अवैध अन्तर्राष्ट्रीय कॉल सेन्टर और डिजिटल एक्सचेंज का भण्डाफोड़ किया है। कार्रवाई के दौरान आरोपी नईमुद्दीन निवासी मनकुआ मकसूदपुर थाना डिलारी मुरादाबाद को दबोच लिया। इस रैकेट में और कितने लोग शामिल है, इसकी जांच की जा रही है।

परिक्रमा



फचैऽक

जा्ग-जा्ग यसै सुणी अच्यान, सबै ठौर घोटलै घोटा्ल
सवाल योई पुछनी सबै, राजनीति बैयों कसिक हटा्ल
राजनीति बै यों कसिक हटा्ल, तबै आलि यांपन सुदा्स
भली कैं चुसि खै हानी हमन, नेता ख्वार्पडिया्क जास
जीतण है पैली भा्ल लागनी, उई भ्रष्टाचार में लपलपान
कतू अजमाई खोरि फुटी, जा्ग-जा्ग यसै सुणी अच्यान।

गणेश पाण्डेय

गोरखा दशैं दीपावली महोत्सव की धूम

देहरादून। वीर गोरखा कल्याण समिति द्वारा गत वर्षों की भाँति इस बार भी तीन दिवसीय गोरखा दशैं-दीपावली महोत्सव का आयोजन किया। जिसमें प्रदेश के अलावा नेपाल से लोगों ने एकजुटता का परिचय दिया और अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं का परिचय दिया। समिति के अध्यक्ष कमल थापा सहित तमाम लोग इसकी सफलता के लिये जुटे रहे।

आठगांव शिलिंग मेले में जुटे

पिथौरागढ़। ग्राम डाबरी के आठगांव शिलिंग का तीन दिवसीय मेले में खासी संख्या में ग्रामीण जुटे। पारम्परिक रीति रिवाजों के साथ हुए आयोजन में क्षेत्र वासियों ने अपनी प्राचीन परम्परा और संस्कृति से जुड़े रहने का संकल्प लिया। सांस्कृतिक मंच पर स्थानीय कलाकारों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

खड़िया खनन की मांग को अनशन

बागेश्वर। खड़िया खनन की मांगों को लेकर क्रमिक अनशन जारी है। अनशन पर बैठे आन्दोलनकारियों ने कहा कि जब तक शासन-प्रशासन की ओर से उनकी मांगों पर लिखित जवाब नहीं मिलता वह आन्दोलन जारी रखेंगे। न्यायालय से खनन संचालन का आदेश दिया जा चुका है लेकिन इसका शासन प्रशासन इसका समाधान करना छोड़ मामले को लम्बित रखे हुए हैं। ऐसे में आन्दोलन ही रास्ता रह जाता है।

स्नान के लिये नए घाटों का निर्माण

हरिद्वार। कुम्भ मेला 2027 में श्रद्धालुओं को स्नान की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये नये घाटों का निर्माण तेजी से किया जा रहा है। कुम्भ नगरी में विभिन्न स्थानों पर तीन किमी से अधिक लम्बाई के नए घाट विकसित किये जा रहे हैं। गंगा नहर बन्दी की अवधि का उपयोग करते हुए प्रशासन ने इन कार्यों को निर्धारित समयावधि में पूरा करने का निर्णय लिया है। घाटों पर दिन-रात निर्माण कार्य जारी है। इनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये मेला प्रशासन नियमित समीक्षा के साथ स्थलीय निरीक्षण भी कर रहा है।

मेलाधिकारी सोनिका तथा अपर मेला अधिकारी दयानन्द सरस्वती ने विभिन्न घाटों पर चल रहे निर्माण कार्यों का जायता लिया। कुम्भ मेला 2027 की तैयारियों के अन्तर्गत सिंचाई विभाग के माध्यम से हरिद्वार से बहारदाबाद के बीच नौ घाटों का निर्माण कराया जा रहा है। अपर गंगा नहर के बाएं तट पर शहीद भगत सिंह घाट से सिंहद्वार के बीच 321 मीटर लम्बे कामधेनु घाट का निर्माण किया जा रहा है। इसी तरह अमरापुर घाट से ऋषिकुल पुल, शंकराचार्य चौक और तुलसी घाट क्षेत्र में कुल 770 मीटर लम्बाई में घाट निर्माण के कार्य चल रहे हैं। सतनाम घाट के करीब भी निर्माण कार्य जारी है।

गेवाड़ विकास समिति का आन्दोलन

चौखुटिया। गेवाड़ विकास समिति का 7 सूत्रीय मांगों को लेकर रामगंगा आरती घाट पर आन्दोलन से हलचल है। क्षेत्रवासियों ने शासन-प्रशासन से क्षेत्र की ज्वलन्त समस्याओं को पूरा करने की मांग की है। ग्राम प्रधान संगठन ने भी आन्दोलन को समर्थन दिया है। संगठन के जिलाध्यक्ष सुनील जोश के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने कहा कि क्षेत्र की जनसमस्याओं के समाधान के लिए चलाए जा रहे आन्दोलन की मांगों पर गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिये। इस दौरान ग्राम प्रधान संगठन चौखुटिया के अध्यक्ष भोपाल सिंह बोरा, नन्दन सिंह फर्त्याल, योगेश कुमार टम्टा, बची बोरा उपस्थित थे।

पुछड़ी बस्ती में अभियान का आंच

रामनगर। कोसी नदी के किनारे सरकारी जमीन पर वर्षों से कब्जे कर रह रहे लोगों को प्रशासन ने अब सख्ती से हटाया है। पुछड़ी बस्ती में 86 पक्के मकानों पर ध्वस्तीकरण के लिये पूरे इलाके को 14 सेक्टरों में बांटकर भारी पुलिस बल तैयार किया गया।

काफी समय से इस अभियान के लिये चेतावनी दी जा चुकी थी लेकिन बार-बार आन्दोलन और राजनीतिक कारणों से यह मान लिया जाता रहा कि शायद मामला ठण्डे बस्ते में चला जायेगा लेकिन शासन-प्रशासन की सख्ती के बाद विगत दिवस तड़के 5 बजे शुरू हुई इस कार्रवाई में मशीनों का शोर गूंजा और देखते ही देखते पक्के कब्जों का ध्वस्तीकरण हो गया। इस पूरी कार्यवाही से पहले और बाद में चर्चाएं भी होती रही हैं।

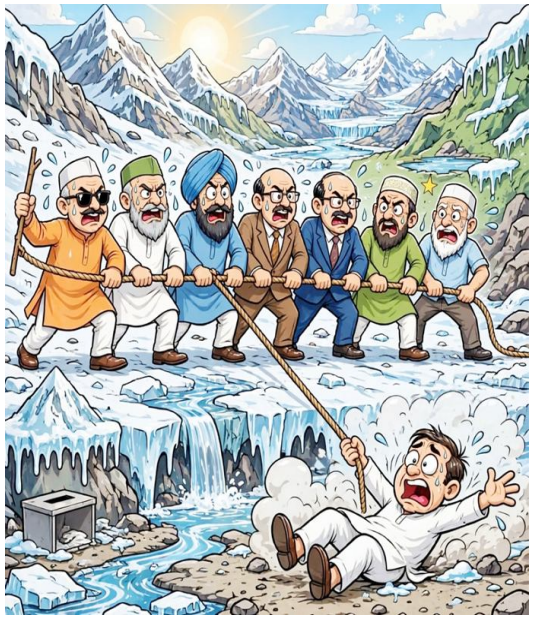
विधानसभा चुनाव तैयारी : टिकट के दावे और अपना पक्ष रखते नेतागण

- हरीश रावत की इच्छा खानपुर सीट है
- भगत का मोह पुत्र और कालाढूंगी सीट
- यशपाल आर्य बाजपुर सीट के लिये तैयार
- उमेश कुमार, चैम्पियन के अपने दाबे कम नहीं
- रेखा आर्य के दिखाने लगी है अपना दबदबा
- रुद्रपुर में टिकट के लिये घमासान जारी
- यूकेडी की पहली सूची जारी, 16 नाम तय

उत्तराखण्ड विधानसभा चुनाव तैयारी के साथ-साथ नेतागण टिकट के दावे और अपना पक्ष रख रहे हैं। ऐसे में किसी को थामने, किसकी को गिराने, किसी के पक्ष में हवा बनाने और किसी की हवा निकालने की बातें भी होने लगी हैं। आरोपों से घिरे छोटे-बड़े नेताओं का चाहत और छटपटाहट को देखते हुए चुनाव परिणामों का अनुमान भी लगाया जा रहा है।

पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत की हार्दिक इच्छा खानपुर सीट है क्योंकि वह उमेश कुमार को पटकनी देकर अपनी बदनामी और सरकार गिराने का बदला लेना चाहते हैं। विधायक उमेश कुमार अपनी ताकत दिखाते हुए सबको ललकारने लगे हैं। उन्होंने पूर्व विधायक प्रणव सिंह, रविन्द्र पनियाला, जितेन्द्र पंवार, किरन चौधरी, अवतार भड़ाना से कहा है सब मेरे खिलाफ एकसाथ खानपुर से चुनाव लड़ कर देख लो गलतफहमी दूर हो जाएगी। प्रणव चैम्पियन एक बार फिर से जोश में कह चुके हैं कि वह दो जगह से चुनाव लड़ेंगे, ऐसे में भाजपा में सियासी घमासान चल रहा है।

कालाढूंगी सीट का मोह विधायक बंशीधर भगत को गहरा है जिस कारण वह साफ कह रहे हैं- मैं और मेरा बेटा दोनों टिकट की लाइन में हैं। पार्टी जिसे चाहेगी टिकट देगी। हल्द्वानी के मेयर गजराज बिष्ट भी बयानबाजी के साथ हलचल बनाए हुए हैं। गजराज की चाह है कि उन्हें टिकट मिले और इसके लिये वह दांव चल रहे हैं। भगत को हिन्दूवादी नेता विपिन पाण्डे पहले ही खुलेआम चुनौती दे चुके हैं। जिला पंचायत सदस्य छवि काण्डपाल भी टिकट की इच्छा में प्रयास कर रही है।



नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य साफ ऐलान कर चुके हैं कि वह बाजपुर सीट से ही चुनाव लड़ेंगे। उन्हें घेरने के लिये भाजपा की ओर से टिकट की रणनीति बनाई जा रही है।

भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरीं खेल मंत्री रेखा आर्य फिर से अपना दबदबा दिखाने लगी हैं। गिरधारी साहू और रेखा के बीच का विवाद खुलकर सबके सामने है लेकिन पस्त होने के बाद रेखा आर्य कह रही हैं कि आने वाले समय में जनता इसका जवाब देगी। सोमेश्वर में उन्होंने विशाल सभा को सम्बोधित किया। अब वह भावुक अपील करते हुए जनता को टटोल रही हैं। रुद्रपुर विधान सभा सीट के लिये दावेदारों की लाइन लम्बी होती जा रही है। भाजपा से शिव अरोरा विधायक के अलावा विकास शर्मा, भारतभूषण चुघ, धीरेन्द्र मिश्रा, अनिल चौहान का नाम लिया जा रहा है। कांग्रेस से राजकुमार ठुकराल को देखते हुए भाजपा टिकट तय करने में गणित लगाने लगी है।

यूकेडी ने चुनाव के लिये अपनी पहली सूची जारी कर दी है। जिससे अनुसार काशीसिंह ऐरी पिथौरागढ़, पुष्पेश त्रिपाठी द्वाराहाट, पूरण सिंह कठैत देवप्रयाग, पंकज व्यास प्रतापनगर, आशीष नेगी कर्णप्रयाग, दिनेश कुन्जवाल जागेश्वर, देवचन्द राजपुर से, प्रताप सिंह सल्ट से, वरुण चन्दोला कपकोट, प्रदीप चन्द काशीपुर, कैलाश पांगती नानकमत्ता से, भुवन चन्द्र रामनगर, राजेन्द्र नेगी कैंट, रितु कंडियाल जुयाल खानपुर, चन्दन सिंह राणा धनोल्टी से दल के प्रत्याशी होंगे।

उक्रांद द्वारा अपने पत्ते खोलने के बाद प्रदेश में चुनावी गतिविधियां तेज हैं। यह भी समझ आ चुका है कि जिसको जितनी चाह है वह लड़ेगा, इसमें पक्ष विपक्ष दोनों ओर से एकता की कोई बात नहीं है। घात-आघात के लिये निकट के लोग ही तैयार हैं। निर्दलीय तैयारियां भी दिखने लगी हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उम्मीदों के पहाड़....

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्थिति भी चुनावी बहस का प्रमुख विषय बन सकती है। पर्वतीय जिलों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी और दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव लोगों की परेशानी बढ़ा रहा है। सड़क सम्पर्क, भूस्खलन और बरसात के दौरान मार्गों के बार-बार बाधित होने की समस्या भी जनता के सामने बड़ी चुनौती बनी हुई है। युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी और स्वरोजगार के सीमित अवसर भी चुनावी मुद्दों में शामिल रहेंगे। पर्यटन, कृषि, बागवानी और स्थानीय उत्पादों पर आधारित रोजगार सृजन की मांग लगातार उठ रही है। इसके अलावा शिक्षा, पेयजल, आपदा प्रबन्धन और पुनर्वास के मुद्दे भी राजनीतिक दलों के एजेंडे में प्रमुखता से शामिल हो सकते हैं। भू-कानून, मूल निवास और स्थानीय संसाधनों पर अधिकार जैसे विषय भी पहाड़ में सम्वेदनशील मुद्दे माने जाते हैं। वहीं चारधाम यात्रा से जुड़े क्षेत्रों में स्थानीय व्यापारियों और युवाओं को मिलने वाले लाभ तथा यात्रा प्रबन्धन पर भी चुनावी चर्चा हुई है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि बदरीनाथ, केदारनाथ, कर्णप्रयाग, थराली, गंगोत्री, यमुनोत्री, श्रीनगर, पौड़ी, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और चम्पावत जैसी सीटों पर इन मुद्दों का सीधा प्रभाव देखने को मिल सकता है। ऐसे में 2027 का चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन की लड़ाई नहीं, बल्कि पहाड़ की पहचान, विकास और भविष्य से जुड़े सवालों का भी चुनाव माना जा रहा है।

27 अक्टूबर से विधानसभा सत्र में एक बार फिर से नेताओं और अधिकारियों का जमावड़ा लगा। और जैसा की पहले से अनुमान था कि सदन में हंगामा होना तय है, वह हुआ भी। सड़क से सदन तक आवाज गूंजी, जिसमें अंकिता भण्डारी हत्याकाण्ड, मंत्री रेखा आर्य के मामले से लेकर प्रदेश जनमुद्दों पर भयंकर भूचाल सा आया।

राज्य आन्दोलनकारियों का कहना है कि आज तक जितने भी सत्र गैरसैंण में हुए हैं, राज्य आन्दोलनकारियों समेत क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों की ओर से बड़ी आशा के साथ अपने क्षेत्र की आवश्यक समस्याओं से मुख्यमंत्री समेत सभी विभागीय मंत्रियों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर मांग पत्र दिए गए, जो कूड़े के भाव मान लिये गये। गैरसैंण की जनता का मानना है कि गैरसैंण को जिला बनाए जाने से यहाँ प्रशासनिक सुदृढ़ता आएगी। बुनियादी सुविधाओं का विकास होगा और पर्वतीय क्षेत्रों की समस्याओं का वास्तविक समाधान हो सकेगा लेकिन कैबिनेट इस सत्र में गैरसैंणवासियों की इस जायज मांग पर बेरुखी दिखाई दी। यह सत्र भी हर बार की तरह सिर्फ राजनीतिक बयानबाजी व घोषणाओं तक ही सीमित रहा। आन्दोलन की आग से युवा और ज्यादा भड़क चुके हैं। अब स्थापना दिवस पर पहाड़ का एक बुनियादी और सबसे बड़ा सवाल फिर से गूंजने लगा है- आखिर जन आन्दोलनों और 42 शहादतों की बुनियाद पर बने उत्तराखण्ड को 26 साल बाद भी अपनी स्थायी राजधानी क्यों नहीं मिल सकी? ऊपर से नित नये कारनामे इस प्रदेश में हो रहे हैं।

जोहार महोत्सव में मातृशक्ति का जमजमा

अपनी संस्कृति के लिये सजग वरिष्ठ महिलाओं का जुटना आशीर्वाद के रूप में देखना चाहिये



हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक वेलफेयर सोसाइटी द्वारा इस बार भी जोहार महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। तीन दिवसीय आयोजन में जिस तरह से उत्साह दिखाई दिया उसमें मातृशक्ति का जमजमा कहा जाएगा। अपनी परम्परागत पोशाक में सजी हर आयुवर्ग की महिलाओं ने तीन दिनों तक हर प्रकार से पूरे आयोजन को निभाया। शोभा यात्रा से लेकर समापन तक हर जगह महिला वर्ग छाया रहा। अपनी संस्कृति के लिये सजग वरिष्ठ महिलाओं का जुटना तो इसे और भी सशक्त बना गया है। वरिष्ठ जनों का जुटना आशीर्वाद के रूप में देखना चाहिये। जिस दौर में सिर्फ दिखावे का बोलबाला मचा है, उसमें सयानों का आना और अपनों को सीख देना वाकेई सुघड़ परम्परा है। महोत्सव में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से लेकर स्टाल तक में महिलाओं ने बखूबी कमान संभाल रखी थी। आयोजकों ने तीन दिन के आयोयन में भरपूर मनोरंजन के लिये कलाकारों को आमंत्रित किया था। इस प्रकार कुछ नये अनुभव इस आयोजन में हुए हैं।



उत्तराखण्ड विधानसभा की पांच वर्षीय अवधि में बैठक घटकर ४५ दिन रह गई.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

भूभाग पर वन क्षेत्र है। राज्य के नौ जिले पूरी तरह पर्वतीय भूगोल के हैं, जबकि दो जिले पूर्ण मैदानी और दो मिश्रित भूगोल वाले। कुल मिलाकर लगभग 80 प्रतिशत पर्वतीय भूभाग वाला राज्य है। ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण में विधानसभा के दो दिवसीय सत्र के आलोक में अब सियासी बहस सत्र की अवधि और विपक्ष की भूमिका पर केन्द्रित हो गई है। उत्तराखण्ड की संसदीय कार्यप्रणाली में एक चिन्ताजनक प्रवृत्ति की ओर फिर से ध्यान आकर्षित करता है। विधानसभा सत्र, विशेष रूप से हाल के वर्षों में, लगातार छोटे होते जा रहे हैं, अक्सर केवल दो से चार दिनों तक ही चलते हैं। इससे विधायकों के पास सार्वजनिक मुद्दों पर चर्चा करने, सरकारी नीतियों की जांच करने और कार्यपालिका को जवाबदेह ठहराने के लिए उपलब्ध समय काफी कम हो गया है। इतने छोटे सत्रों के कारण, सत्र के दौरान पूछे जाने वाले प्रश्न कई विभागों और मंत्रालयों को कवर नहीं कर पाते हैं। वास्तव में, मुख्यमंत्री के सीधे नियंत्रण वाले विभागों के बारे में प्रश्न पूछे जाने का समय काफी समय से समाप्त हो चुका है, क्योंकि सोमवार को सदन की लम्बी बैठकें शायद ही कभी होती हैं और यह दिन मुख्यमंत्री के अधीन विभागों के लिए निर्धारित है। विपक्ष ने सरकार पर बार-बार आरोप लगाया है कि वह असहज सवालों और सार्थक बहस से बचने के लिए जानबूझकर सत्रों की अवधि सीमित करती है। विधायी कार्यवाही के लिए पर्याप्त समय न देने की सरकार की अनिच्छा पर सवाल उठाना जायज़ है। हालांकि कई राजनीतिक पर्यवेक्षकों और समाचार विश्लेषकों ने यह भी बताया है कि विपक्ष इस स्थिति के लिए अपनी ज़िम्मेदारी से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता। आलोचना यह है कि विपक्षी दलों ने भी लंबे और अधिक सार्थक सत्र सुनिश्चित करने में लगातार गम्भीरता या रुचि नहीं दिखाई है। तैयारी बैठकों, विशेष रूप से व्यापार सलाहकार समिति की बैठकों में उनकी भागीदारी अक्सर अनियमित रही है।

इस बार भी सत्र के एजेंडे को अन्तिम रूप देने के लिए अध्यक्ष द्वारा बुलाई गई हालिया बैठकों से कांग्रेस प्रतिनिधि दूर रहे। इसके अलावा कई मौकों पर व्यवधान, सदन से बाहर चले जाना और विरोध प्रदर्शन ने सदन का बहुमूल्य समय बर्बाद किया है, जबकि इसके बाद कोई सार्थक बहस नहीं हुई। उत्तराखण्ड में विधानसभा सत्र 2017 में 18 दिनों से घटकर 2022 में मात्र आठ दिन रह गए हैं। इसके बावजूद स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ है। गौरतलब है कि विधानसभा की कार्यप्रणाली में प्रतिवर्ष 60 सत्रों का प्रावधान है, हालांकि राज्य विधानसभा के गठन के बाद से यह लक्ष्य कभी पूरा नहीं हुआ है। अगस्त 2025 का मानसून सत्र इसका एक और उदाहरण है, जब बार-बार व्यवधान के कारण इसकी कार्यवाही दो दिनों से भी कम समय में समाप्त हो गई और प्रश्नकाल एवं शून्यकाल भी नहीं हो सका। इसलिए, बड़ा सवाल सिर्फ यह नहीं है कि सरकार सवालों से बच रही है या विपक्ष को सवाल उठाने के अवसर से वंचित किया जा रहा है। सवाल यह है कि क्या दोनों पक्षों के निर्वाचित प्रतिनिधि वास्तव में विधानसभा को लोकतांत्रिक जवाबदेही के लिए एक प्रभावी मंच बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उत्तराखण्ड, जहाँ बेरोजगारी, पलायन, अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवा, खराब सम्पर्क और बार-बार आने वाली प्राकृतिक आपदाओं जैसी समस्याएं लगातार बनी हुई हैं, वहाँ विधानसभा सत्रों के लगातार कम होते जाने के बावजूद विधायी ध्यान की कहीं अधिक आवश्यकता है। केवल सैकड़ों प्रश्न प्रस्तुत करना या सदन के बाहर विरोध प्रदर्शन करना सार्थक विधायी भागीदारी का विकल्प नहीं हो सकता। अंततः, जब सरकार की जवाबदेही और विपक्ष की जाँच-पड़ताल दोनों संसदीय औपचारिकताओं तक सीमित हो जाती हैं, तो राज्य की जनता का ही नुकसान होता है।

प्रदेश की धामी सरकार के हाल हुए सत्र में प्रदर्शनकारियों को विधानसभा परिसर तक पहुँचने से रोकने के लिए भारी बल तैनाती के साथ सम्वेदनशील मार्गों पर लोहे के गेट, बैरिकेड और कंटीले तार लगाए गए। गैरसैंण के भराड़ीसैंण में आयोजित मौजूदा सरकार का अंतिम सत्र कई मायनों में याद रखा जाएगा। जिस सौम्य तरीके से इस सत्र का आगाज हुआ इसका समापन बेहद निराशाजनक रहा। जनता को जनहित के जिन मुद्दों पर चर्चा होने की उम्मीद थी उन पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के आपसी टकराव के कारण चर्चा नहीं हो पाई। नतीजतन पहले दिन अनवरत रिकार्ड सात घण्टे तक चलने वाला सत्र दूसरे दिन केवल एक घण्टे और चार मिनट में ही सिमट कर रह गया। गैरसैंण में विधानसभा सत्र के सफल संचालन के लिए प्रतिदिन अनुमानित डेढ़ से दो करोड़ रुपये का खर्च आता है। इसमें बिजली, पानी से लेकर तमाम खर्च शामिल हैं।

दो दिवसीय बाल रामलीला में कलाकारों का मनमोहक अभिनय

डॉ. मनीषा पाण्डे तिवारी

पिथौरागढ़। श्री रामलीला प्रबन्धकारिणी समिति (सदर) के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय बाल रामलीला का भव्य आयोजन किया गया। नवरात्रि में आयोजित होने वाली रामलीला से कुछ दिन बाद आयोजित होने वाली इस बाल रामलीला में नगर के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

रामलीला मैदान में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रथम दिन राम जन्म से लेकर सीता हरण तक और दूसरे दिन जटायु निर्वाण से लेकर राम राज्याभिषेक तक के प्रसंगों का मंचन किया गया।

कार्यक्रम में सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर, सोर वैली, मानस एकेडमी, महर्षि विद्या मन्दिर, स्टैफर्ड, मल्लिकार्जुन, सरस्वती शिशु मन्दिर, तपोवन विद्यास्थली, कन्या मण्डप सहित कई विद्यालयों ने प्रतिभाग किया। सभी विद्यालयों को रामलीला के अलग-अलग प्रकरण आवंटित किए गए थे। बच्चों द्वारा किया गया मंचन बेहद प्रभावशाली रहा। उनकी गायन शैली, सम्वाद अदायगी औरा हाव-भाव को दर्शकों ने खूब सराहा। छोटे-छोटे कलाकारों ने राम, सीता, लक्ष्मण, रावण, हनुमान आदि रामायण के पात्रों को जीवन्त कर दिया, जिसमें पूरा पण्डाल तालियों और उद्घोष से गूंज उठा। समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि इस बाल रामलीला के आयोजन का उद्देश्य बच्चों में भारतीय संस्कृति और संस्कारों को जीवित रखना है ताकि बच्चे सिर्फ मंच पर श्रीराम का अभिनय मात्र न करें बल्कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन के आदर्शों को अपने जीवन में उतार सकें। समिति की यह अनूठी पहल और एक नई शुरुआत है, जो आने वाली पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़े रखेगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दीपावली एवं उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

देवेन्द्र सिंह रावत

'नन्दा होम्स'
कमलुवागांजा रोड,
कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी

हिमालय संगीत शोध समिति

(पूर्णकालिक संगीत विद्यालय)
जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी, हल्द्वानी



मिलम बेक हाउस (नियर- टैक्सी स्टैंड चौराहा) मुनस्यारी
सम्पर्क- 8941807388
MILAM BAKE HOUSE CRAFTED IN THE MOUNTAINS
पहाड़ों में तैयार, स्वाद से भरपूर। हिमालय की वादियों से आपके स्वाद तक। आपके लिये लेकर आया है ताजे स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बेकरी उत्पाद।

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379
APNA GHAR 6396098804
चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)